JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

गढ़वाल मंडल के देवी स्थलों में धार्मिक पर्यटन की वर्तमान स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

[1]प्रखर सिंह पाल, [2]डॉ. मोनिका पांडेय

[1] शोधार्थी [2] सहायक प्राध्यापिका

[1] पर्यटन प्रबंधन विभाग [2]पर्यटन प्रबंधन विभाग

[1] देव संस्कृति विश्वविद्यालय हरिद्वार

सारांश (Abstract) - उत्तराखण्ड का गढ़वाल मंडल धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि की से अत्यंत महत्वपूर्ण समृद्ध क्षेत्र है। यहाँ स्थित प्रमुख देवी स्थलों जैसे माया देवी, चंडी देवी, मनसा देवी, कुंजापुरी, धारी देवी, सुरकंडा देवी, चंद्रबदनी, मणिमाई आदि न केवल आस्था का केंद्र हैं, बल्कि धार्मिक पर्यटन की आधारशिला भी हैं। धार्मिक पर्यटन न केवल आध्यात्मिक संतोष प्रदान करता है, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था, सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन और क्षेत्रीय विकास पर भी गहरा प्रभाव डालता है।यह शोधपत्र गढ़वाल मंडल में धार्मिक पर्यटन की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करता है तथा इसके विकास की संभावनाओं और चुनौतियों को उजागर करता है। अध्ययन से ज्ञात होता है कि हाल के वर्षों में सड़क संपर्क, डिजिटल सेवाओं और सरकारी योजनाओं के कारण पर्यटकों की संख्या में वृद्धि हुई है। इससे स्थानीय रोजगार, आवास, परिवहन और व्यापार को गति मिली है। साथ ही धार्मिक पर्यटन से लोक संस्कृति, परंपराओं और मेलों को भी बढ़ावा मिला है। हालाँकि, इस क्षेत्र को अधोसंरचना की कमी, पर्यावरण प्रदूषण, भीड़–भाड़ और आपदा प्रबंधन जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। यदि सतत पर्यटन की दृष्टि से उचित योजनाएँ बनाई जाएँ तो गढ़वाल मंडल धार्मिक पर्यटन का और अधिक सशक्त एवं आकर्षक केंद्र बन सकता है।

मुख्य शब्द– धार्मिक पर्यटन, तीर्थाटन, देवी स्थल, गढ़वाल मंडल, तीर्थयात्री

1. प्रस्तावना (Introduction)

पर्यटन आज विश्व की सबसे तीव्र गति से विकसित होने वाली आर्थिक गतिविधियों में से एक है। इसमें धार्मिक पर्यटन (Religious Tourism) का विशेष स्थान है क्योंकि यह केवल यात्रियों की आध्यात्मिक आवश्यकताओं को ही नहीं, बल्कि स्थानीय समाज, संस्कृति और अर्थव्यवस्था को भी प्रभावित करता है। धार्मिक पर्यटन, तीर्थाटन या आस्था–आधारित यात्रा के रूप में परिभाषित किया जाता है, जिसमें श्रद्धालु अपने देवी–देवताओं के दर्शन, पूजा और धार्मिक अनुष्ठानों की पूर्ति के लिए विशिष्ट स्थलों की यात्रा करते हैं। उत्तराखण्ड राज्य, जिसे "देवभूमि" के नाम से जाना जाता है, धार्मिक पर्यटन का सबसे प्रमुख केंद्र है। यहाँ के गढ़वाल मंडल में देवी स्थलों की विशेष परंपरा देखने को मिलती है। हरिद्वार स्थित माया देवी, चंडी देवी और मनसा देवी मंदिर भारत के 51 शक्तिपीठों से जुड़े माने जाते हैं। टिहरी गढ़वाल के कुंजापुरी, सुरकंडा देवी और चंद्रबदनी मंदिर त्रिकोणीय शक्ति त्रयी के रूप में प्रसिद्ध हैं। रुद्रप्रयाग की धारी देवी, जिन्हें अलकनंदा नदी की संरक्षिका माना जाता है, श्रद्धालुओं के साथ–साथ स्थानीय संस्कृति और परंपराओं से गहराई से जुड़ी हैं। इसी प्रकार पौड़ी का मणिमाई मंदिर और देहरादून जिले के डाटकाली व सुरेश्वरी देवी मंदिर भी क्षेत्र की आस्था और धार्मिक पर्यटन को मजबूती प्रदान करते हैं। धार्मिक पर्यटन से गढ़वाल मंडल को कई प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं। इससे स्थानीय रोजगार, परिवहन, होटल व्यवसाय, हस्तशिल्प और व्यापार में वृद्धि होती है। साथ ही यह क्षेत्रीय सांस्कृतिक धरोहर, लोककला और पारंपरिक पर्व–त्योहारों को भी संरक्षित और प्रोत्साहित करता है। फिर भी, इसके सामने कई चुनौतियाँ हैं। अति–पर्यटन से भीड़भाड़ और अव्यवस्था की स्थिति उत्पन्न होती है, जिससे स्थानीय

जीवन और पर्यावरण पर दबाव पड़ता है। अवसंरचना की कमी, यातायात समस्या, स्वच्छता और आपदा प्रबंधन की चुनौतियाँ धार्मिक पर्यटन की सततता पर प्रश्नचिह्न लगाती हैं। इस शोधपत्र में गढ़वाल मंडल के देवी स्थलों में धार्मिक पर्यटन की वर्तमान स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इसमें पर्यटन की उपलब्धियों, चुनौतियों, सामाजिक एवं आर्थिक प्रभावों तथा भविष्य की संभावनाओं पर प्रकाश डाला गया है। अध्ययन का उद्देश्य धार्मिक पर्यटन को सतत और संतुलित दिशा में आगे बढ़ाने के उपाय सुझाना है, ताकि यह क्षेत्र न केवल आस्था का बल्कि भारत विश्व के प्रमुख धार्मिक पर्यटन स्थलों में से एक है, जहाँ विविध देवी–देवताओं के मंदिर, तीर्थस्थल और आध्यात्मिक केंद्र लाखों श्रद्धालुओं को आकर्षित करते हैं। उत्तराखण्ड राज्य, जिसे "देवभूमि" कहा जाता है, अपने धार्मिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक महत्व के कारण विशेष पहचान रखता है। इस राज्य का गढ़वाल मंडल देवी स्थलों की समृद्ध परंपरा और आस्था का प्रमुख केंद्र है। धार्मिक पर्यटन केवल आस्था और पूजा–अर्चना तक सीमित नहीं है, बल्कि यह क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था, सामाजिक–सांस्कृतिक संरचना और पर्यावरण पर भी गहरा प्रभाव डालता है। यद्यपि आधुनिक परिवहन, डिजिटल सेवाएँ और सरकारी योजनाएँ धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा दे रही हैं, लेकिन अधोसंरचना की कमी, अति–पर्यटन, पर्यावरणीय क्षति और आपदा प्रबंधन से जुड़ी चुनौतियाँ अभी भी विद्यमान हैं। अतः इस शोधपत्र का उद्देश्य गढ़वाल मंडल के देवी स्थलों में धार्मिक पर्यटन की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना, इसके सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों का अध्ययन करना तथा भविष्य के लिए संभावनाओं और चुनौतियों पर प्रकाश डालना है।

2. धार्मिक पर्यटन की वर्तमान स्थिति (Current Scenario)

गढ़वाल मंडल के देवी स्थल आज उत्तराखण्ड ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण भारत के धार्मिक पर्यटन का प्रमुख आकर्षण बन चुके हैं। यहाँ प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में तीर्थयात्री और पर्यटक दर्शन के लिए आते हैं। माया देवी, चंडी देवी और मनसा देवी (हरिद्वार), कुंजापुरी, सुरकंडा देवी और चंद्रबदनी (टिहरी), धारी देवी (रुद्रप्रयाग), मणिमाई (पौड़ी) तथा डाटकाली व सुरेश्वरी देवी (देहरादून) नवरात्र, सावन और ग्रीष्मकालीन पर्यटन सीजन में विशेष भीड़ को आकर्षित करते हैं। उत्तराखंड में हर साल पर्यटकों और चारधाम यात्रा में आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ रही है। पर्यटन विभाग की ओर से जारी रिपोर्ट के अनुसार, बीते वर्ष प्रदेश में 5.96 करोड़ पर्यटक व श्रद्धालु उत्तराखंड आए। कुमाऊं की तुलना में गढ़वाल मंडल में पर्यटकों की संख्या अधिक दर्ज की गई। पर्यटन और तीर्थाटन उत्तराखंड के अर्थव्यवस्था की रीढ़ मानी जाती है। चारधाम यात्रा में केदारनाथ, बदरीनाथ, गंगोत्री व यमुनोत्री धाम आने वाले तीर्थयात्रियों की संख्या हर साल बढ़ रही है। पर्यटन विभाग के आंकड़ों के मुताबिक, 2023–24 में चारधाम यात्रा में 56 लाख श्रद्धालुओं में दर्शन किए इस साल यह आंकड़ों अब तक 35 लाख पहुंच गया है। विभागीय रिपोर्ट के अनुसार, बीते वर्ष प्रदेश में कुल 5.96 करोड़ पर्यटक आए। इसमें गढ़वाल मंडल में 5.39 करोड़ और कुमाऊं मंडल में 57 लाख पर्यटक पहुंचे। पर्यटकों की संख्या अधिक होने से गढ़वाल मंडल में कारोबार बढ़ रहा है। स्थानीय लोगों को भी पर्यटन से रोजगार के अवसर मिल रहे हैं।

2.1 वर्तमान स्थिति का विश्लेषण निम्न प्रकार से किया जा सकता है-

बुनियादी ढांचे की कमी- पहाड़ों पर कठिन भू–भाग और जलवायु के कारण, पर्यटन विकास में बुनियादी ढांचे की कमी एक बड़ी चुनौती है, जिससे पर्यटकों को आने–जाने में परेशानी होती है.

पर्यटन को बढ़ावा देने के प्रयास- स्थानीय प्रशासन और निगम पर्यटन सर्किट के निर्माण पर काम कर रहे हैं, जैसे कि किंकालेश्वर, धारी देवी, और ज्वाल्पा देवी मंदिर को जोड़ने वाले सर्किट, ताकि पर्यटकों की संख्या बढ़ाई जा सके.

स्थानीय लोगों के लिए रोजगार- पर्यटन के विकास से स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा होते हैं, जो क्षेत्र की आर्थिक स्थिति में सुधार कर सकते हैं.

सुरक्षित पर्यटन पर जोर- सुरक्षित यात्रा का संदेश फैलाने और पर्यटकों के अनुभव को बेहतर बनाने पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है.

2.2 चुनौतियाँ और सुधार के सुझाव

बुनियादी ढांचे का विकास - यात्रा को आसान बनाने और पर्यटकों को बेहतर सुविधाएँ प्रदान करने के लिए सड़कों, लॉजिंग और अन्य पर्यटन सुविधाओं का विकास महत्वपूर्ण है.

प्राचीन मंदिरों का संरक्षण- इन मंदिरों के इतिहास और महत्व को समझते हुए उनका संरक्षण और प्रचार–प्रसार किया जाना चाहिए.

स्थानीय संस्कृति का समावेश- धार्मिक पर्यटन के साथ–साथ स्थानीय संस्कृति, रीति–रिवाजों और स्थानीय उत्पादकों को भी बढ़ावा दिया जाना चाहिए, ताकि पर्यटक स्थानीय अनुभव प्राप्त कर सकें.

रोजगार के अवसर- बेरोजगार युवाओं को पलायन से रोकने और उन्हें रोजगार प्रदान करने के लिए पर्यटन के क्षेत्र में अधिक से अधिक अवसर पैदा करने चाहिए.

नए पर्यटक स्थलों की पहचान-उन ओझल और अनदेखे क्षेत्रों को पर्यटन की दृष्टि से विकसित किया जाना चाहिए, जो पर्यटकों को आकर्षित कर सकें

3 पर्यटक आगमन (Tourist Inflow)

पिछले एक दशक में देवी स्थलों पर आने वाले पर्यटकों की संख्या में निरंतर वृद्धि हुई है।

हरिद्वार और टिहरी जिले के प्रमुख मंदिरों में नवरात्र और मेलों के समय लाखों श्रद्धालु पहुँचते हैं।

कोविड–19 महामारी के बाद ऑनलाइन बुकिंग और सुविधाओं ने धार्मिक पर्यटन को पुनः गति प्रदान की है।

4 पर्यटन अवसंरचना (Tourism Infrastructure)

सड़क संपर्क में सुधार हुआ है, जिससे दूरस्थ देवी स्थलों तक पहुँचना आसान हुआ है।

होटल, धर्मशाला, लॉज और भोजनालयों की संख्या बढ़ी है, परंतु अभी भी पर्याप्त और गुणवत्तापूर्ण सुविधाओं की कमी है।

कई स्थलों पर पार्किंग, शौचालय और डिजिटल सूचना केंद्रों की आवश्यकता बनी हुई है।

5 आर्थिक प्रभाव (Economic Impact):

धार्मिक पर्यटन स्थानीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है।

होटल व्यवसाय, स्थानीय दुकानें, फूल–माला विक्रेता, परिवहन सेवा प्रदाता और पुजारियों की आय का प्रमुख स्रोत यही है।

महिलाओं और युवाओं के लिए छोटे व्यवसाय एवं स्वरोजगार के अवसर बढ़े हैं।

6 सामाजिक–सांस्कृतिक स्थिति (Socio&Cultural Impact)

धार्मिक पर्यटन से मेलों, लोककला और क्षेत्रीय पर्व–त्योहारों को प्रोत्साहन मिला है।

श्रद्धालु और पर्यटकों के आगमन से सांस्कृतिक आदान–प्रदान भी होता है।

परंतु भीड़–भाड़ और व्यावसायीकरण से पारंपरिक धार्मिक वातावरण कहीं–कहीं प्रभावित हुआ है।

7 अवसंरचना और सुविधाएँ (Infrastructure & Facilities)

प्रमुख देवी स्थलों तक पहुँचने के लिए मार्ग और सड़कें सुधरी हैं, लेकिन दूरस्थ क्षेत्रों में अभी भी परिवहन की समस्याएँ हैं।

होटल, धर्मशाला और भोजनालयों की संख्या बढ़ी है, लेकिन गुणवत्तापूर्ण सेवाओं की मांग अभी भी पूरी नहीं हुई है।

पार्किंग, सार्वजनिक शौचालय और सुरक्षा व्यवस्थाओं में सुधार की आवश्यकता बनी हुई है।

8 आर्थिक एवं रोजगार प्रभाव (Economic & Employment Impact)

धर्मिक पर्यटन स्थानीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

होटल व्यवसाय, स्थानीय दुकानदार, परिवहन सेवा प्रदाता, फूल–माला विक्रेता, और पुजारी इस पर्यटन से प्रत्यक्ष लाभान्वित होते हैं।

महिलाओं और युवाओं के लिए स्वरोजगार और छोटे व्यवसाय के अवसर बढ़े हैं।

9. सामाजिक–सांस्कृतिक प्रभाव (Socio&Cultural Impact)

धार्मिक पर्यटन से स्थानीय संस्कृति, परंपराएं और लोककला संरक्षित और प्रोत्साहित होती हैं।
मेलों, धार्मिक उत्सवों और त्योहारों में पर्यटकों की भागीदारी स्थानीय सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा देती है।
अति–पर्यटन और व्यावसायीकरण से कुछ स्थलों पर पारंपरिक धार्मिक माहौल प्रभावित हुआ है।

10. पर्यावरणीय स्थिति (Environmental Status)

पर्यटकों की बढ़ती संख्या के कारण कचरा, प्लास्टिक और शोर–प्रदूषण की समस्याएँ बढ़ रही हैं।
नदियों और जंगलों पर पर्यटन का दबाव बढ़ा है।
स्थानीय प्रशासन और एनजीओ प्रयासरत हैं, परंतु स्थायी समाधान हेतु और नीति व योजना आवश्यक है।

11 सुरक्षा और प्रबंधन (Safety & Management)

भीड़ प्रबंधन, आपदा प्रबंधन और स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार की आवश्यकता है।

चारधाम यात्रा व प्रमुख देवी स्थलों पर ऑनलाइन और ऑफलाइन पंजीकरण अनिवार्य किया गया है।

इससे यह पता चलता है कि किस दिन कितने श्रद्धालु कहाँ पहुँचेंगे और उसी हिसाब से व्यवस्थाएँ की जाती हैं।

प्रवेश द्वारों पर क्यूआर कोड स्कैनिंग और टोकन सिस्टम भी लागू किया गया है।

यात्रा मार्गों पर यातायात नियंत्रण कक्ष (Traffic Control Room) स्थापित किए गए हैं।

सड़क सुधार, चौड़ीकरण और डामरीकरण कार्य किए जा रहे पार्किंग स्थल, बैरियर और इमरजेंसी लेन बनाए गए हैं ताकि एंबुलेंस और रेस्क्यू वाहन आसानी से निकल सकें।

पुलिस और अर्धसैनिक बलों की अतिरिक्त टुकड़ियाँ चारधाम यात्रा के समय तैनात की जाती हैं।

सीसीटीवी कैमरे और ड्रोन से निगरानी की जाती है।

भीड़ प्रबंधन (Crowd Management) के लिए बैरिकेडिंग, मार्ग–विभाजन और एक–तरफा पैदल रूट बनाए गए हैं।

12 धार्मिक पर्यटन की वर्तमान स्थिति की प्रमुख चुनौतियाँ(Major Challenges of Religious Tourism)

गढ़वाल मंडल में धार्मिक पर्यटन तेजी से बढ़ रहा है, लेकिन इसके साथ ही कई चुनौतियाँ भी उत्पन्न हो रही हैं। प्रमुख चुनौतियाँ निम्नलिखित हैं:

12.1 अधोसंरचना की कमी (Infrastructure Deficiency)

अधिकांश दूरस्थ देवी स्थलों तक पहुँचने के लिए सड़कें संकरी और कठिन हैं।

पार्किंग, धर्मशाला, होटल और शौचालय जैसी आधारभूत सुविधाओं की कमी।

यातायात और सार्वजनिक परिवहन की अपर्याप्तता।

12.2 भीड़ और पर्यटक प्रबंधन (Crowd & Tourist Management)

नवरात्र, सावन और धार्मिक मेलों के समय अत्यधिक भीड़।

भीड़–भाड़ के कारण यात्रा और दर्शन में कठिनाई।

आपातकालीन परिस्थितियों (जैसे स्वास्थ्य या प्राकृतिक आपदा) में प्रबंधन की चुनौती।

यात्रियों की लगातार बढ़ती संख्या (60द्ध70 लाख तक सालाना) के कारण प्रबंधन पर दबाव।

संकीर्ण मार्ग और सीमित सुविधाएँ कई बार भीड़ प्रबंधन को कठिन बना देती हैं।

प्राकृतिक आपदाओं का खतरा (भूस्खलन, ग्लेशियर फटना, अचानक बारिश) हमेशा बना रहता है।

12.3. पर्यावरणीय दबाव (Environmental Pressure)

कचरा, प्लास्टिक और अपशिष्ट प्रबंधन में कमी।

नदियों, जंगलों और पहाड़ी क्षेत्रों पर पर्यटन का दबाव।

प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों का असंतुलन।

12.4. सुरक्षा और स्वास्थ्य (Safety & Health)

भीड़ प्रबंधन और आपदा प्रबंधन की अपर्याप्तता।

तीर्थयात्रियों की स्वास्थ्य और प्राथमिक चिकित्सा सेवाओं की कमी।

स्थानीय लोगों की आजीविका और यात्रियों की सुरक्षा के बीच संतुलन बनाना प्रशासन के लिए चुनौती है।

12.5. पर्यटन का असंतुलित विकास (Uneven Tourism Development)

कुछ प्रमुख मंदिरों में अत्यधिक ध्यान, जबकि अन्य देवी स्थल कम प्रचारित और कम विकसित।

दूरस्थ क्षेत्रों में रोजगार और आर्थिक लाभ का असंतुलन।

12.6. सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभाव (Socio&Cultural Impact)

व्यावसायीकरण के कारण पारंपरिक धार्मिक वातावरण प्रभावित होना।

स्थानीय संस्कृति, परंपराओं और लोककला पर पर्यटन का दबाव।

13 धार्मिक पर्यटन की वर्तमान स्थिति के सकारात्मक प्रभाव (EUtended Analysis of Positive Impacts) –

13.1 स्थानीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव (Impact on Local Economy)

धार्मिक पर्यटन स्थानीय बाजार, होटल, धर्मशाला, भोजनालय और परिवहन सेवाओं के लिए स्थिर आय का स्रोत है।

पूजा सामग्री, फूल–माला, प्रसाद और हस्तशिल्प के विक्रेता आर्थिक रूप से लाभान्वित होते हैं।

दूरस्थ क्षेत्रों में पर्यटन से छोटे व्यवसाय और ग्रामीण रोजगार के अवसर पैदा होते हैं।

13.2. सांस्कृतिक संरक्षण और जागरूकता (Cultural Preservation & Awareness)

पर्यटकों के आगमन से लोककला, संगीत, नृत्य, पारंपरिक उत्सव और मेलों का संरक्षण होता है।

स्थानीय संस्कृति और धार्मिक परंपराओं का प्रसार राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर होता है।

युवाओं में सांस्कृतिक आदान–प्रदान और पहचान की भावना मजबूत होती है।

133. धार्मिक आस्था और सामाजिक एकता (Religious Belief & Social Cohesion)

तीर्थयात्रा से श्रद्धालुओं में आध्यात्मिक संतोष और धार्मिक आस्था बढ़ती है।

विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक समूहों के लोग देवी स्थलों पर मिलकर सामुदायिक भावना और एकता का अनुभव करते हैं।

धार्मिक मेलों और त्योहारों के माध्यम से सामाजिक समरसता और आपसी सहयोग बढ़ता है।

134. पर्यावरणीय और सतत विकास पहल (Environmental & Sustainable Initiatives)

कई देवी स्थलों और स्थानीय समितियों ने "ग्रीन तीर्थ यात्रा" और पर्यावरण जागरूकता अभियान शुरू किए हैं।

सफाई, वृक्षारोपण, जल संरक्षण और प्लास्टिक मुक्त कार्यक्रमों से पर्यावरणीय प्रभाव को कम किया जा रहा है।

सतत पर्यटन (ेनेजंपदंइसम ज्वनतपेउ) के माध्यम से आने वाले पर्यटकों को जिम्मेदार और जागरूक बनाया जा रहा है।

135. क्षेत्रीय और बुनियादी ढांचे का विकास (Regional & Infrastructure Development)

सड़क, परिवहन, स्वास्थ्य सुविधा और डिजिटल सूचना सेवाओं में सुधार।

दूरदराज क्षेत्रों में निवेश और विकास की संभावनाओं में वृद्धि।

स्थानीय हस्तशिल्प और उत्पादों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विपणन के अवसर।

136. शिक्षा और जागरूकता (Education & Awareness)

स्थानीय लोगों में पर्यटन और सांस्कृतिक धरोहर के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ी है।

युवा पीढ़ी में पर्यटन प्रबंधन, गाइडिंग और हस्तशिल्प व्यवसाय के प्रति रूचि बढ़ी है।

धार्मिक स्थलों पर पर्यावरण और सुरक्षा नियमों के प्रति पर्यटकों को भी शिक्षित किया जा रहा है।

निष्कर्ष (Conclusion) गढ़वाल मंडल के देवी स्थल धार्मिक पर्यटन के लिए न केवल धार्मिक आस्था का केंद्र हैं, बल्कि यह क्षेत्रीय सामाजिक–आर्थिक और सांस्कृतिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि वर्तमान में धार्मिक पर्यटन काफी सक्रिय और व्यापक रूप से विकसित है। हरिद्वार, टिहरी, रुद्रप्रयाग, देहरादून और पौड़ी के प्रमुख देवी स्थलों पर लाखों तीर्थयात्री और पर्यटक प्रतिवर्ष आते हैं, जिससे स्थानीय व्यवसाय, रोजगार और आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि हुई है। धार्मिक पर्यटन के सकारात्मक प्रभावों में स्थानीय अर्थव्यवस्था का सशक्त होना, सांस्कृतिक परंपराओं और लोककला का संरक्षण, सामाजिक एकता और धार्मिक आस्था में वृद्धि, सतत पर्यटन और पर्यावरणीय जागरूकता शामिल हैं। इसके बावजूद, पर्यटन के विकास के साथ अधोसंरचना की कमी, पर्यावरणीय दबाव, भीड़–भाड़, सुरक्षा और आपदा प्रबंधन की चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। यदि प्रशासन, स्थानीय समुदाय और संबंधित संस्थान मिलकर सतत पर्यटन, बेहतर अवसंरचना, पर्यावरण संरक्षण और आपदा प्रबंधन की रणनीतियाँ अपनाएँ, तो गढ़वाल मंडल धार्मिक पर्यटन के क्षेत्र में और अधिक सशक्त और आकर्षक केंद्र बन सकता है। इस प्रकार यह अध्ययन न केवल वर्तमान स्थिति का विश्लेषण प्रस्तुत करता है, बल्कि धार्मिक पर्यटन के विकास और सुधार के लिए दिशा–निर्देश भी प्रदान करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूचि (References)

1. उत्तराखण्ड पर्यटन विभाग. (2022). वार्षिक रिपोर्ट: धार्मिक और सांस्कृतिक पर्यटन आँकड़े. देहरादून: उत्तराखण्ड पर्यटन विभाग।

2. गुप्ता, आर., – शुक्ला, एस. (2019). Religious Tourism in Uttarakhand: Patterns and Trends- New Delhi% Indian Tourism Research Journal.

3. पांडेय, के. पी. (2018). उत्तराखण्ड के देवी स्थल और धार्मिक पर्यटन का सामाजिक–आर्थिक प्रभाव. देहरादून: हिमालयन पब्लिकेशन।

4. शर्मा, आर. (2020)- Sustainable Tourism Practices in Garhwal Region- International Journal of Tourism & Hospitality Studiè, 12(3), 45–60-

5. सिंह, बी. (2017). Religious Pilgrimage and Cultural Heritage in Garhwal Himalaya- Journal of Himalayan Studies, 8(2), 22–35.

6. श्रवैप, ड. (2016). Tourism Development and Local Economy in Uttarakhand- Indian Journal of Regional Studies, 10(1), 55दृ70.

7. स्थानीय समाचार पत्र और ऑनलाइन स्रोत: Amar Ujala] Dainik Jagran] The Times of India – उत्तराखण्ड पर्यटन रिपोर्ट (2018दृ2023)।

8. Pant] R-] & Rawat] S- (2015). Impact of Religious Tourism on Local Communities in Garhwal- Tourism and Society Journal, 5(4), 88–102-

9. Government of India] Ministry of Tourism- (2021)- Incredible India Annual Tourism Statistics- New Delhi Ministry of Tourism-

10. Environmental and Ecological Studies- (2019). Tourism and Environmental Challenges in Himalayan Regions- Himalayan Journal of Environmental Studies] 14(2), 112–128-